ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-11* December- 2020
Innovation The Research Concept

परिवहन विकास की समस्यायें एवं सुझाव : गढ़वाल मण्डल के विशेष सन्दर्भ में

Problems and Suggestions of Transport Development: With Special Reference to Garhwal Division

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 27/12/2020, Date of Publication: 28/12/2020

कृष्ण गोपाल
सहायक प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
जे0 एम0 आई0,
मैनपुरी, उ0प्र0, भारत

सारांश

परिवहन के साधन किसी क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विकास प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करते हैं। परिवहन एक ऐसा महत्त्वपूर्ण साधन है जो किसी पिछड़े क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक विकास में तीव्र परिवर्तन लाने की सुविधा प्रदान करते हैं। वस्तुतः अर्थतंत्र के प्रत्येक अवयव में परिवहन तंत्र में शिराओं व धमनियों की तरह विस्तृत होते हैं जिनमें व्यापारिक परिवहन रूपी प्राणदायिनी शक्ति प्रवाहित होती है।

गढ़वाल मण्डल में हरिद्वार व देहरादून जैसे लगभग समतल भू–भाग तथा उत्तरकाशी, चमोली, रुद्रप्रयाग, टिहरी गढ़वाल और पौढ़ी गढ़वाल जैसे उच्च पर्वतीय भू–भाग के कारण पर्याप्त विभिन्नताएँ पायी जाती हैं। यही भौगोलिक विषमताएँ व्यापक रूप से परिवहन व्यवस्था को प्रभावित करती हैं। इनके कारण अनेकानेक समस्याओं का जन्म होता है। शोधार्थी ने अपने सर्वेक्षण के दौरान परिवहन समस्याओं का स्वयं सामना किया है, परिवहन विकास में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं। इन सुझावों का प्रयोग करके गढ़वाल मण्डल के परिवहन का विकास करने से सर्वांगीण विकास किया जा सकता है।

Means of transport play an important role in the social, economic, cultural development process of an area. Transport is an important means that facilitates rapid change in social, economic and cultural development of a backward region. In virtually every element of the economy, the transport system is spread like veins and arteries in which the vital power of commercial transport flows.

Substantial variations are found in the Garhwal division due to almost flat terrain like Haridwar and Dehradun and high mountainous terrain like Uttarkashi, Chamoli, Rudraprayag, Tehri Garhwal and Pauri Garhwal. These geographical disparities affect the transport system in a big way. Due to these many problems arise. The researcher has faced the transport problems himself during his survey, suggestions are being presented for the solution of the problems faced in the transport development. All these development can be done by developing the transport of Garhwal division using these suggestions.

मुख्य शब्द : परिवहन, आधारभूत अभिसंरचनाएँ, विकास, परिचालन, विकसित, विकासशील, यातायात, मूल्य, वृद्धि, दुर्घटना, सड़क, रज्जुमार्ग।
Transportation, Infrastructure, Development, Operation, Development, Development, Traffic, Price, Growth, Accident, Road, Ropeway

प्रस्तावना

किसी भी देश, प्रदेश एवं क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक विकास के आधार की स्थापना में परिवहन के साधनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। आज वर्तमान युग गतिशील युग है और विश्व एक वृहद ग्राम में परिवर्तित हो गया है। विकसित एवं विकासशील देश सभी एक–दूसरे से घनिष्ट आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, औद्योगिक एवं वाणिज्यक अन्तर्सम्बन्धों में दृढ़तर आबद्ध हो रहे हैं। अब कोई भी क्षेत्र विश्व से बिना सम्बन्ध जोड़े विलग या एकाकी नहीं रह सकता है। गाँव की छोटी से छोटी आवश्यकता से लेकर विश्वस्तर पर परिवहन की अहम भूमिका है। गाँव का उच्च स्तरीय आर्थिक विकास बढ़ाने के लिए

आधारभूत अभिसंरचनाएं महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करती हैं। आधारभूत अभिसंरचनायें संतुलित आर्थिक विकास की कुंजी है।

अध्ययन क्षेत्र

भारतवर्ष के नवोदित 27वें राज्य उत्तराखण्ड के कुमायूँ मण्डल के पूर्व–उत्तर में गढ़वाल मण्डल स्थित है। गढ़वाल मण्डल का अक्षांशीय विस्तार $29^0 27'30''$ उत्तर से $31^0 28'$ उत्तर तक तथा देशान्तरीय विस्तार $77^0 10'$ पूर्व से $80^0 05'$ पूर्व तक स्थित है। गढ़वाल मण्डल की उत्तरी सीमा हिमांचल प्रदेश तथा चीन से, पश्चिमी सीमा हरियाणा से, पूर्व में कुमायूँ मण्डल अर्थात् पिथौरागढ़, बागेश्वर, अल्मोड़ा, नैनीताल, ऊधमसिंह नगर एवं दक्षिणी सीमा उत्तर प्रदेश राज्य से निर्धारित है।

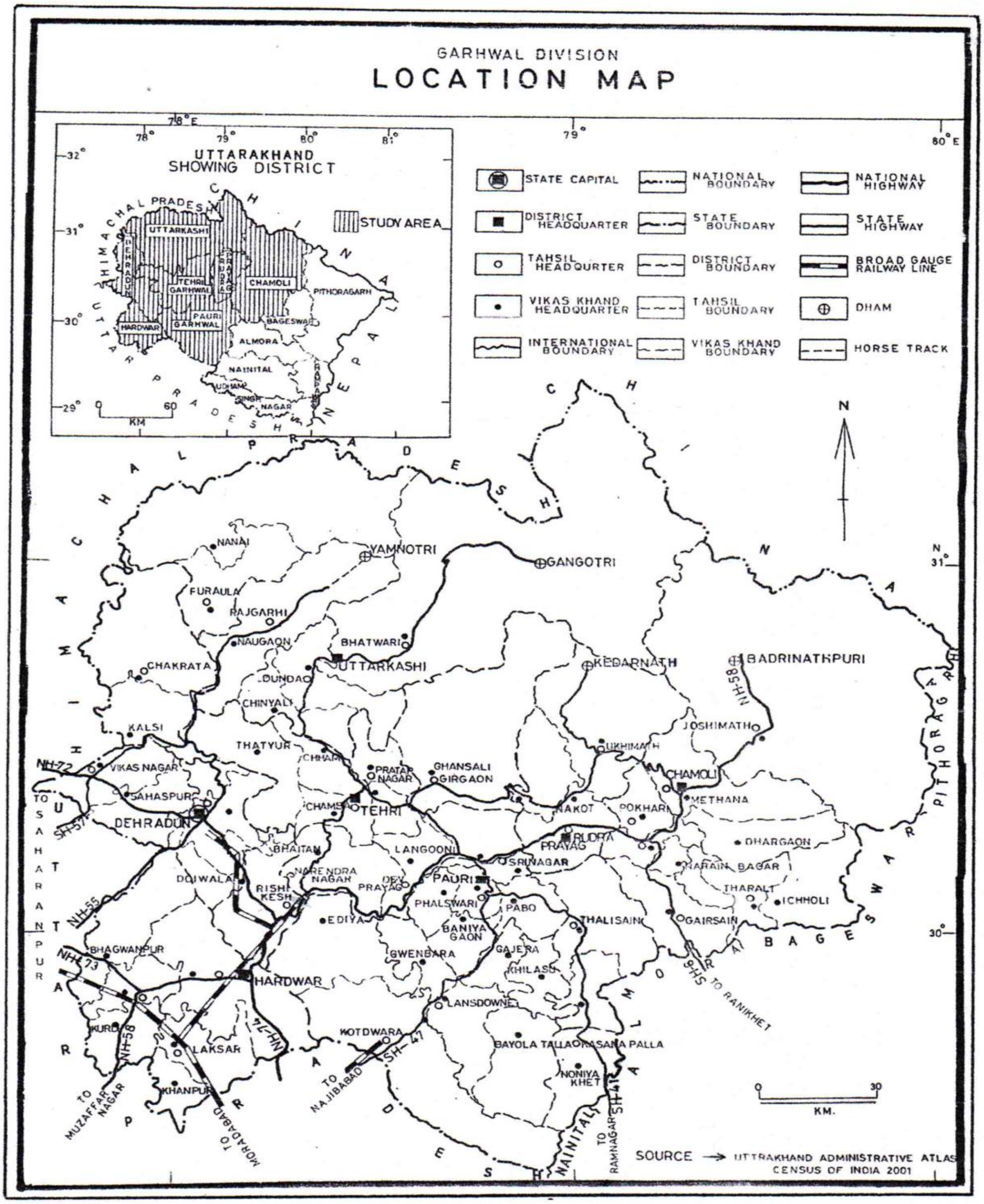

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-11* December- 2020
Innovation The Research Concept

सारणी क्रमांक 1
गढ़वाल मण्डल : सड़कों की लम्बाई वर्ष, (2006–07)

जनपद का नाम	क्षेत्रफल वर्ग किमी	जनपद में सड़कें (लम्बाई किमी)	प्रति 1000 वर्ग किमी में सड़कों की लम्बाई	प्रति लाख जनसंख्या पर सड़कों की लम्बाई
उत्तरकाशी	8016	1258	1144.37	445.47
चमोली	7519.5	1193	155.25	338.58
रुद्रप्रयाग	2439	650	331.05	286.15
टिहरी गढ़वाल	3796	1824	445.41	307.76
पौड़ी गढ़वाल	5230	3445	674.76	553.52
देहरादून	3088	2550.47	1498.61	329.83
हरिद्वार	2360	1871	821.26	139.08
गढ़वाल मण्डल	32448.5	12791.47	394.21	260.78

गढ़वाल मण्डल का कुल क्षेत्रफल 32448.50 वर्ग किमी है। अध्ययन क्षेत्र में सड़कों की कुल लम्बाई 12791.47 किमी है। प्रति 1000 वर्ग किमी तथा एक लाख की जनसंख्या पर औसत 260.78 किमी आता है। विस्तृत अध्ययन हेतु सारणी क्रमांक 1 तथा आरेख–2 दृष्टव्य है।

परिकल्पना

प्रस्तुत शोध पत्र में परिकल्पना एक आधार प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत शोध पत्र में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जायेगा–

1. ग्रामीण विकास की कुँजी परिवहन के साधन हैं।
2. यातायात के साधनों के विकास से समग्र विकास को तीव्र गति मिलती है।

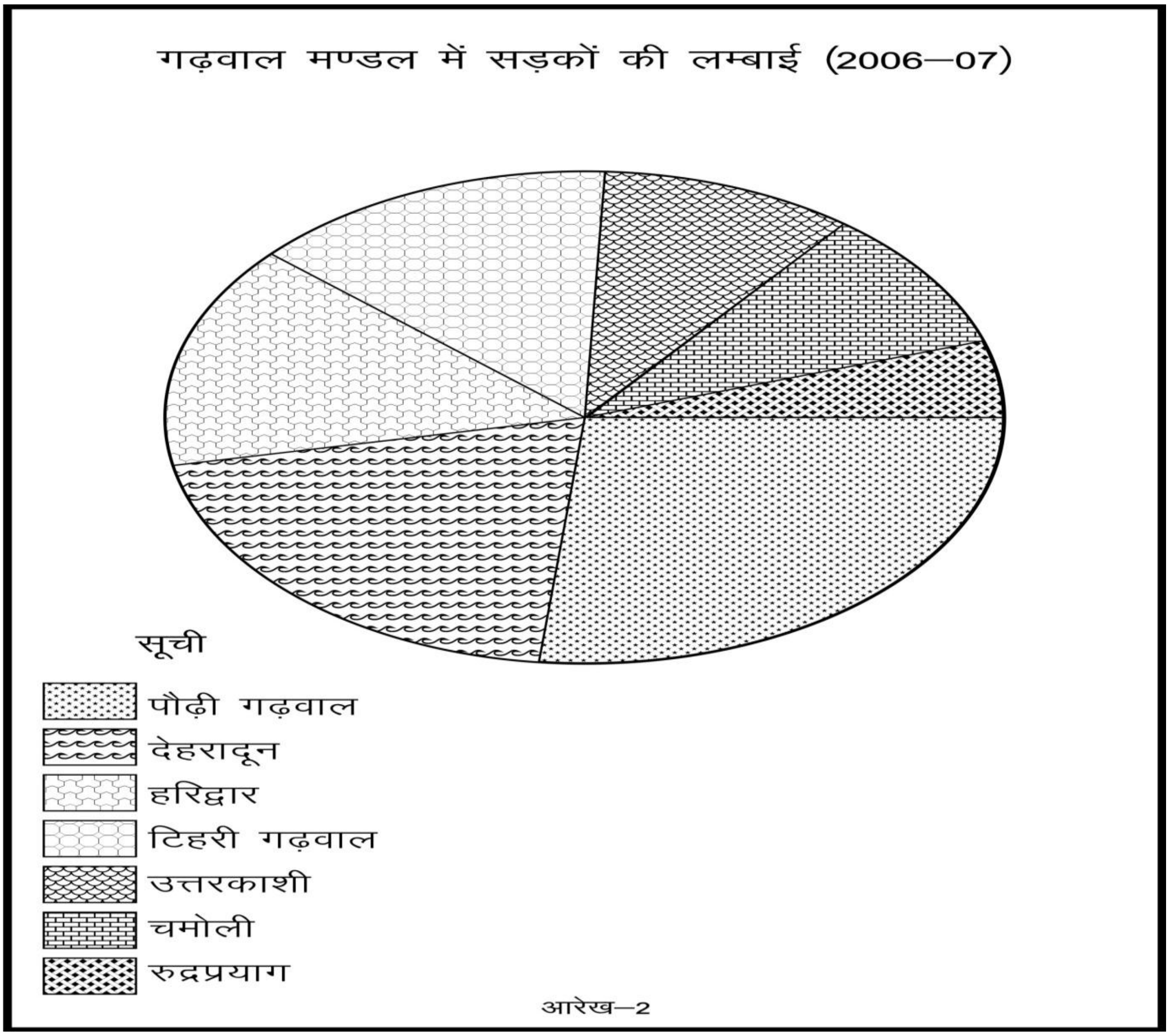

आरेख–2

3. परिवहन के साधनों के विकास से औद्योगिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक विकास को गति मिलती है।
4. यातायात के साधनों के विकास से पर्यटन, व्यापार आदि के विकास को तीव्र गति मिलती है।

शोध पत्र के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. गढ़वाल मण्डल का भौगोलिक अध्ययन करना।
2. गढ़वाल मण्डल में वर्तमान परिवहन के साधनों का मूल्यांकन करना।
3. सड़क व रेल परिवहन की गुणवत्ता का आकलन एवं नवीन सड़क व रेल परिवहन के साधनों के निर्माण हेतु योजनाएं प्रस्तुत करना।
4. परिवहन के विकास में आने वाली समस्याओं को ज्ञात करके उनके सुझाव प्रस्तुत करना।
5. परिवहन के साधनों का विकास पर प्रभाव ज्ञात करना।
6. समग्र विकास में परिवहन की भूमिका ज्ञात करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आकड़ों को आधार मानकर अध्ययन किया है। यह आकड़े जिला अर्थ एवं सांख्यिकीय विभाग, परिवहन विभाग, स्वास्थ्य, शिक्षा, औद्योगिक, कृषि आदि विभागों एवं सर्वेक्षण से प्राप्त किये गये हैं।

परिवहन की समस्यायें

गढ़वाल मण्डल के गाँव–नगरों को मिलाने वाली सड़कें बहुत कम तथा खराब दशा में हैं। जिस कारण से यातायात में बहुत अधिक व्यय होता है और यातायात के साधन भी अति शीघ्र क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। अध्ययन क्षेत्र में धीमी गति से चलने वाले और कम भारक क्षमता वाले वाहन प्रमुख यातायात के साधन हैं। यहाँ की बहुधा सड़कें बहुत टूटी–फूटी दशा में हैं। बरसात के दिनों में अध्ययन क्षेत्र की सड़कों की दशा अत्यन्त दयनीय हो जाती है। अनेक बार भूस्खलन के कारण यातायात अवरुद्ध हो जाता है। गाँव का सम्पर्क नगरों से कट जाता है। पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण पुल–पुलियों का नितान्त अभाव रहता है।

विभिन्न सड़क परिवहन निगमों तथा अधिकरणों के लिए नई बसें खरीदी जाए। नई बसें तो पुरानी बसों के स्थान पर दी जाए और शेष बसें बेड़े की वर्तमान संख्या में वृद्धि करने के लिए। एक तो बसों के रखरखाव की व्यवस्था ठीक न होने के कारण और दूसरी बसों के परिचालन में जहाँ एक ओर वृद्धि हुई। यात्रियों के किराए में एक प्रश्नवाचक वृद्धि न होने के कारण एक अनुमान है कि राज्य की सड़क परिवहन निगमों का बहुत घाटा होता है। सड़क परिवहन निगमों के कार्य निष्पादन में सुधार लाने के लिए कार्यरत उपाय किए जाएं। जहाँ आवश्यक समझा जाए वहां किराए में वृद्धि की जा सकती हैं।

परिवहन के विभिन्न साधनों के मध्य समन्वय का एक ऊँचा स्तर किया जाए और साधनों का उपयोग करने वालों तथा परिवहन कर्ताओं के बीच एक तालमेल किया जाए जिससे इन सुविधाओं का अधिकतम उपयोग किया जा सके। परिवहन के मूल्यों का स्थिर और एक ऐसे तंत्र की स्थापना करने में सरकार की असफलता है जो यह सुनिश्चित करती है। परिवहन का प्रत्येक साधन अपना उचित स्थान पाता है और एक–दूसरे का पूरक सिद्ध होता है।

1. केंद्र स्तर पर परिवहन आयोग की स्थापना की समस्या है।
2. राज्य स्तर पर भी परिवहन आयोग की समस्या है।
3. अध्ययन क्षेत्र में यातायात करने में रेल विभाग असमर्थ है।
4. सड़क परिवहन के विकास में प्रमुख रूप से बाधा राज्यों में असहयोग की भावना का है।
5. अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति पर्वतीय तथा आवश्यक सुविधाओं की दूरी के कारण क्षेत्र में सड़कों के निर्माण हेतु भारी मशीनरी आदि का पहुंचना भी सड़कों के विकास में बाधक है।
6. अध्ययन क्षेत्र में सड़क निर्माण हेतु श्रमिकों की उपलब्धि वर्ष की पूरी अवधि में नहीं रहती जब अन्य कार्य प्रारंभ हो जाते हैं तब श्रमिकों का अभाव हो जाता है इस कारण से भी सड़क निर्माण में बाधा उत्पन्न होती है।
7. सड़क निर्माण हेतु प्रयुक्त डामर पेट्रोलियम उत्पाद है। इस पर पेट्रोलियम पदार्थों की कमी का प्रभाव पड़ता है। वर्तमान में पेट्रोलियम पदार्थों की नियमित आपूर्ति नहीं होने के कारण डामर मिलने में कठिनाई आ जाती है। इससे भी सड़क निर्माण कार्य में बाधा आती है।
8. प्राकृतिक प्रकोप– वर्षा, बाढ़, आँधी, पर्वतों के खिसकने, भूस्खलन, बर्फ पड़ने आदि सड़क कार्यों में बाधाएं उत्पन्न कर देती हैं।
9. सड़क निर्माण हेतु लिए जाने वाले निर्णय में देरी से निर्माण गति में बाधा पहुंचती है।
10. सड़कों का पर्याप्त रखरखाव नहीं हो पाता है।
11. सड़कों की कई वर्षों तक मरम्मत नहीं हो पाती है जिसके कारण सड़कें टूट फूट जाती हैं तथा सड़क दुर्घटना में भारी वृद्धि होती है।
12. भूमि प्राप्त करने और पर्यावरण संबंधी अनुमति लेने की समस्या।
13. अनिवार्य बाध्यता के तहत जोखिम में भागीदारी की समस्या।
14. सक्रियता की भागीदारी की समस्या।
15. मार्गों, बाईपासों एवं पुलों पर कर वसूलने की समस्या।
16. अध्ययन क्षेत्र में परिवहन विकास में भूस्खलन प्रमुख बाधक कारक है।

रेल परिवहन समस्याएं

गढ़वाल मंडल भौगोलिक दृष्टि से पर्वतीय क्षेत्र है। इसमें मार्गों का निर्माण घुमावदार, ढालों का तीव्र एवं मंद होना, नदियों के किनारे–किनारे मार्ग का निर्माण करना, बहुत परेशानी एवं पर्वतों के आने पर काटना और सुरंग बनाने की समस्याएं आती हैं।

वायु परिवहन की समस्याएं

अध्ययन क्षेत्र गढ़वाल मंडल में वायु परिवहन की बहुत बड़ी समस्या है। वायु परिवहन के लिए हवाई अड्डे की आवश्यकता है। हवाई अड्डा बनाने के लिए 60–70 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र की समतल भूमि की आवश्यकता

होती है। गढ़वाल मंडल का धरातल पर्वतीय है जहां पर इतना समतल क्षेत्रफल मिलना असंभव है। एक वायुयान 10 किलोमीटर लंबाई में समतल मैदान पर दौड़ता है तथा बाद में रुक पाता है। पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण ऊंची–ऊंची चोटियाँ है जिसके कारण वायुयान दुर्घटना होने के अवसर रहते हैं। उत्तरकाशी, चमोली, रुद्रप्रयाग, टिहरी गढ़वाल एवं पौड़ी गढ़वाल जनपदों में वर्षा, गर्मी व सर्दी में पहाड़ों के खिसकने की प्रक्रिया (भूस्खलन), बर्फ गिरना, कोहरे की कटने के कारण वायुयानों के उतरने में भी बहुत बड़ी समस्या आती है। इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं कि वायुयान परिवहन के विकास में अनेक समस्याएं हैं।

अन्य परिवहन संबंधी समस्याएं

अध्ययन क्षेत्र गढ़वाल मंडल में सड़क, रेल एवं वायुयान परिवहन के विकास में सबसे अधिक समस्या वहाँ का पर्वतीय धरातल है। अन्य परिवहन विकास में यहाँ जल परिवहन के लिए अनेक नदियाँ, नहरें व नालें हैं। लेकिन यहाँ पर भी समस्या धरातल के ऊँचे–नीचे व पथरीले होने की है। अध्ययन क्षेत्र में रज्जू मार्गों का विकास किया जा सकता है लेकिन रज्जू मार्गों के विकास में पर्वत, नदी, नाले, घनी झाड़ियाँ, ऊँचे–ऊँचे वृक्ष आदि समस्यायें आती हैं। अंत में सारांश के रूप में परिवहन के विकास में पर्वतीय धरातल, नदियाँ, नाले, घने जंगल, ऊँचे वृक्ष आदि समस्याएं आती हैं।

परिवहन सुझाव

1. केंद्र स्तर पर राष्ट्रीय परिवहन आयोग की स्थापना की जाए।
2. राज्य स्तर पर परिवहन आयोग की स्थापना की जाए।
3. अध्ययन क्षेत्र में नवीन तकनीक से यातायात में रेल विभाग को समर्थ बनाना संभव है।
4. सड़क परिवहन के विकास में राज्यों को आपसी सहयोग की भावना को अपनाना परम आवश्यक है तभी परिवहन का विकास संभव है।
5. वैज्ञानिक तकनीकी से वर्तमान में छोटी–छोटी एवं हल्की मशीनों के द्वारा सड़कों का विकास संभव है।
6. अध्ययन क्षेत्र में श्रमिकों के अभाव को दूर करने के लिए उनकी आवश्यकता को पूरा करने पर वर्ष भर श्रमिक उपलब्ध रहेंगे।
7. सड़क निर्माण हेतु डामर के स्थान पर वैज्ञानिक तकनीक से प्राप्त डामर का प्रयोग किया जा सकता है।
8. प्राकृतिक प्रकोप से बचने के लिए पर्वतों के किनारे तारकशी एवं रोकथाम की जाए जिससे पर्वतों का कटाव एवं खिसकना रुक जाए।
9. सड़कों के निर्माण में लिए जाने वाले निर्णयों में अति शीघ्रता की जाए।
10. पर्याप्त रखरखाव की परम आवश्यकता है इसकी व्यवस्था की जाए।
11. सड़कों की मरम्मत प्रत्येक समय होती रहनी चाहिए। इसके लिए राज्य स्तर, जिला स्तर एवं केन्द्र स्तर पर विभाग की स्थापना की जानी चाहिए।
12. भूमि प्राप्त करने एवं पर्यावरण संबंधी अनुमति सरलता से मिलनी चाहिए।
13. सक्रियता की भागीदारी की समस्या को प्रशासन, शासन एवं सामाजिक स्तर से हल करनी चाहिए।
14. मार्गों, बाईपासों एवं पुलों पर कर वसूलने के लिए शासन द्वारा विभाग बनाना चाहिए।

रेल परिवहन सुझाव

पर्वतीय क्षेत्र में रेल मार्गों को बनाने के लिए पर्वत काटने, सुरंग बनाने एवं पुल बनाने में वैज्ञानिक तकनीकों का प्रयोग किया जाए तो पर्वतीय क्षेत्र में भी रेल परिवहन का विकास संभव है।

वायु परिवहन

गढ़वाल मण्डल में वायु परिवहन में बड़े वायुयान से परिवहन करना तो कठिन है लेकिन नवीन वैज्ञानिक तकनीक (हेलीकॉप्टरों) का प्रयोग कर वायु परिवहन संभव है।

अन्य परिवहन

गढ़वाल मण्डल में सड़क, रेल व वायु परिवहन के अतिरिक्त रज्जुमार्ग व जलमार्ग भी है। रज्जु मार्ग को विकसित करने के लिए तारों का प्रयोग कर, खम्भों का प्रयोग एवं नवीन तकनीक का प्रयोग किया जाये तभी रज्जु मार्गों का विकास सम्भव है। नदियों, नहरों, नालों में जल एकत्रित एवं गहराई बढ़ाने पर जल परिवहन भी सम्भव है।

निष्कर्ष

गढ़वाल मण्डल के परिवहन के विकास में आने वाली समस्याओं को दूर करने के लिए सुझाव का प्रयोग करने पर परिवहन का विकास सम्भव है। किसी क्षेत्र के परिवहन विकास होने से वहाँ का आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक विकास सम्भव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *कोशिक, एस0डी0 – भौगोलिक विचारधाराएं एवं विधितन्त्र, आठवां संस्करण, 1995, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ0 460.*
2. *मोहन एन0 – गाँवों की खुशहाली में सड़कों की भूमिका कुरुक्षेत्र अक्टूबर 2006, पृ0 23.*
3. *सिंह, ओम प्रकाश – नगरीय भूगोल, तारा बुल एजेन्सी कमान्दा, वाराणसी, 1987, पृ0 307.*
4. *अश्वनी कुमार – आगरा मण्डल में परिवहन का ग्राम्य विकास पर प्रभावः एक भौगोलिक अध्ययन, अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध,डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, 2007*
5. *जोशी, अजय – ग्रामीण सड़कों की स्थिति योजना, 31 मई 1993, पृ0 23*
6. *जगदीश शरन माथुर – भारतीय सड़क परिवहन व्यवस्था योजना, 1–15 अक्टूबर, पृष्ठ 07.*
7. *अनन्त मित्तल – ग्रामीण विकास में सड़क, आवास और बिजली की भूमिका, कुरुक्षेत्र, अक्टूबर 2005, पृ0 36–39*
8. *Singh, B.N. -Transport and Communication Problem in Orrisa, N.G.J.I., Varanasi, 3, 1957*
9. *Berry, B.J.L.-"Recent Studies Concering the Role of Transportation in Space Economy", AAG Vol. 49, No. 3, Publication 1952.*